आज की मुरली का सार --

बाबा ने कहा, संपूर्ण पवित्र आत्मा की परिभाषा हे जो आत्मा स्वयं के साथ, परिवार के साथ और प्यारे बाबा के साथ संपूर्ण ऑनेस्ट हे, वही आत्मा संपूर्ण पवित्र हैं.

भक्ति में हम गाते हे, शिव ही सत्य हे, शिव ही सुंदर हे. हमें स्वयं में चेक करना हे की वही शिव परमपिता-परमात्मा हमें मिले हे तो हम उनसे कितना सच्चा रहते हे. बाबा के साथ में तब पूरा सच रहूंगा जब में स्वयं के साथ सच्चा रह कर, खुद की जो भी विकनेस हे उसे सही रूप में देख सकूंगा.

खुद के साथ सच्चा बनने के लिए सबसे पहले हमें अन्तरमुखि हो के रह ने की प्रैक्टिस करनी पडेग़ी. बाबा ने कहा, अन्तरमुखि बनने के लिए परचिंतन की जगह स्वचिंतन करना हे और अभिमान की जगह स्वमान में रहने की आदत डालनी हे. बाबा ने कहा, श्रीमत् की जगह परमत पर चलते हे, तो उसको भी ईमानदार नहीं कहेंगे. बाबा ने जो भी खज़ाने दिये हे, ज्ञान का खजाना, समय का खजाना, दिव्यगुणों का खजाना उसे विश्व कल्याण की बजाए अन्य कार्य में व्यर्थ गँवा देते हे, तो ये भी अमानत में खयानत करना हे.

बाबा ने कहा बड़े ते बड़ी प्युरिटी की स्टेज हैं - ऑनेस्ट बनना.

हम कहा तक ऑनेस्ट बने हे, ये स्वयं में चेक करने कि लिए अन्य पोईन्ट्स --

- सदा सर्व के प्रति शुभ भावना व श्रेष्ठ कामना रहती हैं?

- सदा संकल्प, बोल व कर्म द्वारा सदा निमित ओर निर्माण रहते हे?

- सदा हर कदम में समर्थ स्थिति का अनुभव होता हे? सदा हर संकल्प में बाप से साथ और सहयोग के हाथ का अनुभव होता हे?

- सदा हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव होता हे?

- बाबा के सामने हम स्वयं को स्पष्ट करते हे यानी हम जैसे हे वैसे स्वयं को बाप के सामने प्रत्यक्ष करते हे?

- मेरी प्युरिटी की धारणा या हर श्रीमत् की धारणा, सदा काल के लिए प्राप्ति के अनुभव के आधार पर हे?

ॐ शांति.